IJRAR.ORG E-ISSN: 2348-1269, P-ISSN: 2349-5138

INTERNATIONAL JOURNAL OF RESEARCH AND ANALYTICAL REVIEWS (IJRAR) | IJRAR.ORG

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

भारत में सामाजिक परिवर्तन :महात्मा गाँधी एवं उनके अनुयायी

डॉ. लोकेश कुमार नरवाल

(पूर्व शोध छात्रः राजस्थान विश्वविद्यालय)

प्रस्तावना –

परिवर्तन प्रकृति का नियम है। परिवर्तन की प्रक्रिया निरन्तर (अनवरत रूप से) चलती रहती है। समाज इसी प्रकृति का एक महत्वपूर्ण भाग है इस कारण से सामाजिक परिवर्तन स्वाभाविक है।

गाँधी जी ने सामाजिक परिवर्तन के अनेक साधन बतायेः– सत्य, अहिंसा, अस्तेय, अपरिग्रह, असहयोग, अनशन, हड़ताल, सविनय अवज्ञा एवं ट्रस्टीशीप, चरखा पद्धति, बुनियादी एवं स्त्री शिक्षा के विचारों के माध्यम में सामाजिक परिवर्तन लाने का प्रयास किया। गाँधीजी के विचारों से परिवर्तित होकर भारतीय समाज की स्थिति में श्रमिकों की स्थिति में सुधार, जाति व्यवस्था में परिवर्तन, स्त्रियों की स्थिति में परिवर्तन, आर्थिक क्षेत्र में प्रगति राजनीतिक चेतना में वृद्धि, सामाजिक जागरूकता में वृद्धि, पारिवारिक क्षेत्र में अधिकारों की प्राप्ति, शक्ति संरचना में बदलाव, शिक्षा का प्रचार–प्रसार के माध्यम से सामाजिक परिवर्तन हुआ।

सामाजिक परिवर्तन : अवधारणात्मक दृष्टिकोण :–

परिवर्तन प्रकृति का एक शाश्वत एवं अटल नियम है। मानव समाज भी उसी प्रकृति का अंश होने के कारण परिवर्तनशील है। बहुत समय पूर्व ग्रीक विद्वानों ने भी कहा था, सभी वस्तुएं परिवर्तन के बहाव में है। उसके बाद से इस बात पर बहुत विचार किया जाता रहा है कि मानव की क्रियाएं क्यों और कैसे परिवर्तित होती हैं? समाज के वे क्या विशिष्ट स्वरूप हैं जो व्यवहार में परिवर्तन को प्रेरित करते हैं? समाज में आविष्कार परिवर्तन कैसे लाते हैं एवं आविष्कार करने वालों की शारीरिक विशेषताएं क्या होती है? परिवर्तन को शीघ्र ग्रहण करने एवं ग्रहण न करने वालों की शरीर रचना में क्या भिन्नता होती है? क्या परिवर्तन किसी निश्चित दिशा से गुजरता है ? यह दिशा रेखीय है या चक्रीय? परिवर्तन के सन्दर्भ में इस प्रकार के अनेक प्रश्न किये गये ।

परिवर्तन क्यों और कैसे होते हैं, ये प्रश्न आज भी पूरी हल नहीं हो पाये हैं। सामाजिक परिवर्तन इसलिए होता है, क्योंकि प्रत्येक समाज असन्तुलन के निरन्तर दौर से गुजर रहा है। कुछ व्यक्ति एक सम्पूर्ण की इच्छा रख सकते हैं तथा इसके लिए प्रयास भी करते है। सामाजिक परिवर्तन एक अवश्यम्भावी तथ्य हैं। समाज के स्थायित्व का भ्रम चारों ओर फैलाया जा सकता है। निश्चयात्मकता के प्रति खोज निरन्तर बनी रह सकती है, और विश्व अनन्त है–इस विषय में हमारा विश्वास दृढ हो सकता है, लेकिन यह तथ्य सदैव विद्यमान रहने वाला है। कि विश्व के अन्य तत्वों की तरह समाज अपरिहार्य रूप से और बिना किसी छूट के सदैव परिवर्तित होता रहता हैं।

गाँधीजी के विचारों स परिवर्तित भारतीय समाज –

सामाजिक जागरूकता में वृद्धि –

पिछले कुछ वर्षो में स्त्रीयों की सामाजिक जागरूकता में काफी वृद्धि हुई है। अब स्त्रीयां पर्दा–प्रथा को बेकार समझने लगी है। अब बहुत सी स्त्रीयां घर की चार दीवारी के बाहर खुली हवा में सांस ले रही है। अब वे रूढ़ोवादी सामाजिक बंधनों से मुक्त होने के लिये प्रयत्नशील है आज अनेक स्त्रीयां महिला संगठनों और क्लबों की सदस्य है। कई स्त्रीयां तो समाज कल्याण के कार्य में लगी हुई

स्त्रियों की स्थिति में परिवर्तन –

महत्वपूर्ण परिवर्तन इस प्रकार है, स्त्री शिक्षा के क्षेत्र में प्रगतिः स्वतंत्रता के पश्चात् स्त्री शिक्षा का व्यापक प्रसार हुआ है। इसके पूर्व न तो माता–पिता लड़कियों को शिक्षा दिलाने के पक्ष में थे और न ही शिक्षा की दृष्टि से समुचित सुविधाऐ उपलब्ध थी। वर्तमान में लड़कियाँ व्यावसायिक शिक्षा भी ग्रहण कर रही है। शिक्षण से सम्बन्धित ट्रेनिग कॉलेजो एवं मेडिकल कॉलेजो में लड़कियो की संख्या प्रतिवर्ष बढती जा रही है। डॉ. पणिकर ने लिखा है कि स्त्रियों की शिक्षा एवं राजनीतिक जागृति ने उस कुल्हाड़ी को तेज कर दिया है जिसकी सहायता से हिन्दू सामाजिक जीवन की जंगली झाडियां को साफ करना सम्भव हो गया है।

जाति–व्यवस्था में परिवर्तन –

वर्तमान समय में जाति में अनेक परिवर्तन हुए है और उसका परम्परागत स्वरूप विघटित हुआ है। जाति में परिवर्तन, विघटन या उसे निर्बल बनाने वाले कारक उस प्रकार है। पाश्चात्य शिक्षा एवं सभ्यता, औद्योगिकीकरण एवं नगरीकरण, धन का बढ़ता महत्व, स्वतंत्रता आन्दोलन, प्रजातंत्र की स्थापना, धार्मिक आन्दोलन, यातायात एवं संचार साधनों में उन्नति, स्त्री शिक्षा का प्रसार, संयुक्त परिवारों के विघटन जाति पंचायतों का हास जजमानी प्रथा की समाप्ति।

शिक्षा का प्रचार–प्रसार बढ़ा है,-

समाज में गांधीवादी ने सामाजिक परिवर्तन के लिए अनेक साधन अपनाऐ जो कि निम्न है– सत्य, अहिंसा, अस्तेय, अपरिग्रह, वर्ण धर्म का सिद्धान्त, अस्पृश्यता का अन्त, साम्प्रदायिकता एकता, स्त्री सुधार, बुनियादी शिक्षा। बुनियादी शिक्षा वर्तमान में चल रहे भारत सरकार के कौशल विकास की अवधारणा है जो कि महात्मा गांधी की बुनियादी शिक्षा पर आधारित है अतः गांधी जी की विचारधारा व सिद्धान्त भारतीय समाज व व्यक्ति के लिये अत्यन्त उपयोगी है, गांधीजी ने ट्रष्टिशिप सिद्धान्त के आधार पर सामाजिक परिवर्तन करने का प्रयास किया।

बिनोवा भावे का भूदान –

बिनोवा भावे गॉधीवादी विचारधारा से अत्यन्त प्रभावित थे उन्होंने 'भूदान' आंदोलन चलाकर 'सर्वोदय' और गॉधीवादी विचारधारा को गति प्रदान की। गॉधीजी एव ं विनोवा भावे सामाजिक कान्ति में 'सर्वोदय 'आन्दोलन के द्वारा 'धन के न्याय सिद्धान्त' के सिद्धहस्त हस्ताक्षर सिद्ध हुए किन्तु यह कदापि नहीं कहा जा सकता कि वे इस सम्बन्ध में पहले मूर्धन्य विद्वान थे। 'धन का न्याय सिद्धान्त'

युगों से चला आ रहा सिद्धान्त था। ईसामसीह, मुहम्मद ने बहुत पहले इसका सूत्रपात कर दिया था। इस उपदेश का प्रसार 'जॉन लेस्ली' ने किया जिसका प्रभाव 'रस्किन' एवं 'टालस्टाय' पर पड़ा। गॉधी चूकि 'जॉन रस्किन' और 'टॉलस्टाय' के विचारो ं से प्रभावित थे उन्होंने इस कार्य को गति प्रदान कर दी। विनोवा भावे ने 'भूदान' के द्वारा सर्वसाधारण के लिए एक सजीव सिद्धान्त प्रस्तुत किया। बिनोवा भावे अन्य प्रदेशों में घमू –घूम कर भूदान के लिए लोगों केा प्रेरित करते रहे। बिनोवा भावे का लक्ष्य 5 करोड ं एकड़ भूमि का भूदान लेना था। हालांकि यह लक्ष्य पूर्ण न हो सका किन्तु इस कार्यक्रम को अपार सफलता मिली। भूदान आदोलन ने आगे चलकर 'सम्पत्ति दान', 'जीवनदान' तथा 'ग्राम दान' का मार्ग प्रशस्त किया।

जयप्रकाश नारायण के शब्दों में यह'' आर्थिक और सामाजिक कांति लाने का यह गॉधीवादी मार्ग है, यह नवीन जीवन का सिंद्धान्त और व्यवहार है, यह नवीन सामाजिक दर्शन है। यह एक नवीन मानवता तथा एक नवीन सभ्यता का सूत्रपात है।''

'भूदान' का आधारभूत तत्व के सम्बन्ध में गीता में भगवान कृष्ण के उपदेश का मार्मिक चित्रण है ''जो व्यक्ति दूसरों को दिये बिना ही सम्पत्ति का प्रयोग करते हैं वे चोर हैं। सज्जन मनुष्य, जो यज्ञ के बाद शैष रहता है उसे खाते हैं और समस्त पापों से मुक्त हेा जाते हैं किन्तु जो दुष्टात्मा अपने लिए ही भोजन बनाते है अपना ही पाप खाते हैं।'

लोकनायक जयप्रकाश नारायण 'सर्वोदय' से सम्पूर्ण कांति की ओर –

1951 में बिनोवा भावे द्वारा प्रायोजित 'भदूान आदोलन' में सहयोग करते हुए उन्होंने देश के जागीरदारों और जमीदारों से

आग्रह किया कि वे आवश्यकता से अधिक भूमि की भू–दानी करें। भू–दान आंदोलन विकसित हेाकर अब 'ग्रामदान' आंदोलन के रूप में परिवर्तित हो गया। यह गॉधीवादी अहिंसात्मक विचारधारा की चरम परिणित थी। भूदान–ग्रामदान आधारित

आंदोलन सामाजिक व्यवस्थाओं में बुनियादी परिवर्तन करने में असफल रहा जिसके कारण वे सकिय 'सर्वोदयी' बन गये और विचार किया कि सामाजिक व्यवस्था का शुद्धिकरण सिर्फ 'सम्पूर्ण कांति' से ही संभव है। 5 जून 1974 को पटना में आयोजित छात्र संघर्ष समिति की आम सभा में बोलते हुए उन्होंने 'समग्र कांति' की घोषणा कर दी। जयपकाश नारायण ने जीवनपर्यन्त जनभावनाओं को ध्यान में रखकर अपनी चिन्तन यात्रा को समयानुकूल परिवर्तित किया। चिन्तन परिवर्तन प्रकिया अग्रांकित है–

1. राष्ट्रवादी चरण
2. मार्क्सवादी साम्यवादी चरण
3. लोकतंत्र–समाजवादी चरण
4. गॉधीवादी–सर्वोदयी चरण
5. समग्रवादी चरण।

वह हमे आम जन समस्याओं के समाधान हेतु एक ऐसी कांति चाहते थे जो गॉधीवादी अहिंसक तरीके से सम्पूर्ण व्यवस्था में आमूल–मूल परिवर्तन करे।

निष्कर्ष:– उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि सामाजिक परिवर्तन गांधी का दर्शन चिन्तन का एक विलक्षण प्रयोग है। आध्यात्मिक चेतनाओं और सांसारिक लक्षणों के समन्वय द्वारा गांधी ने राजनीतिक, सामाजिक दर्शन को ऐसा नवीन आयाम प्रदान कर दिया है कि उनकी विचारधारा को राजनीतिक और सामाजिक चिंतन के परम्परागत वर्गीकरणों, व्यक्तिवाद या समष्टिवाद, उदारवाद या समाजवाद या पूंजोवाद, साम्यवाद की परिधि में बांधना संभव नहीं है। गांधी जी ने किसी नवीन विचारधारा के प्रवर्तन का दावा नही किया तथापि उन्होंने राजनीतिक सामाजिक व आर्थिक प्रश्नों पर विचार के लिए एक सर्वथा नवीन और मौलिक दृष्टि से प्रदान की। इस प्रकार से महात्मा गाँधीजी के विचार सामाजिक परिवर्तन के लिए प्रासंगिक बने हुए है और रहेंगे।

सन्दर्भ सूची–

1 सूरजीत कौर जोली "(सम्पादिका) गांधी एक अध्ययन" नई दिल्ली 2007, पृ.सं.–104
2 सुरेन्द्र वर्मा "मेटाफिजिकल फाउण्डेशन ऑफ महात्मा गॉधीज थॉट", नई दिल्ली 1970 पृ.सं.–42
3 बापू की छाया, "नवजीवन द्वारा प्रकाशित प्रथम संस्करण" पृ.सं.–93
4 टुण्डक डॉ. सी. एन. "हिन्द स्वराज की नवीनतम अवधारणा", नन्दलाल प्रकाशन जयपुर 2016 पृ.सं. –101–102
5 डी. जी. तेन्दुलकर "महात्मा गांधी भाग ट" बम्बई पृ.सं.–380
6 डॉ. राजेन्द्र प्रसाद "गांधी जी की देन" पृ.सं.–90
7 यंग इण्डिया 4–6–1927
8 हिन्दी नव जीवन 27–10–1927
9 दृष्टिकोण मंथन, पाक्षिक पत्रिका, नई दिल्ली दिसम्बर 2012
10 दैनिक भास्कर सम्पादकीय पृष्ठ 24–4–2010
11 भगवद्गीता अध्याय–3, भलोक 12 एवं 13।